Gazettes & Debates Section
Parliament Library Building
Room No. FB-025
Block 'G'
Acc. No. 25377
Dated 07.12.2014

LOK SABHA DEBATES

(Part II—Proceedings other than Questions and Answers)

Vol. I. First day of the Ninth Session of First Parliament of India No. 1

LOK SABHA

Monday, 21st February, 1955

The Lok Sabha met at Ten Minutes Past Twelve of the Clock

[MR. SPEAKER (SHRI G. V. MAVALANKAR) *in the Chair*]

QUESTIONS AND ANSWERS

(*No Questions: Part I not published*)

MEMBER SWORN

Shri Benjamin Hansda (Purnea *cum* Santal Parganas—Reserved—Sch. Tribes).

PRESIDENT'S ADDRESS

Secretary: I beg to lay on the Table a copy of the President's Address to both Houses of Parliament assembled together on the 21st February, 1955.

राष्ट्रपति : संसद् के सदस्यगण, पूरे एक वर्ष के बाद आप से कुछ कहने मैं फिर संसद् में आया हूं । मुझे खुशी है कि पिछला वर्ष, घरेलू और अन्तर्राष्ट्रीय मामलों की दृष्टि से, हमारे देश के लिए काफी सफलता का वर्ष रहा है । भारत के लोग और यह संसद् अपने कार्य पर संतोष कर सकते हैं । किन्तु संतुष्ट हो कर बैठ रहने का यह अवसर नहीं है । हमें अपने देश में गहन समस्याओं का सामना करना है और उधर मानवता के भविष्य पर फिर से युद्ध के काले बादल मंडरा रहे हैं ।

मुझे हर्ष है कि सभी दूसरे देशों से हमारे सम्बन्ध मैत्रीपूर्ण रहे हैं और कुछ देशों के साथ मैत्री तथा सहयोग की भावना में और भी अधिक वृद्धि हुई है । बहुत से देशों से सम्मान्य नेतागण हमारे देश में आये । पिछले वर्ष हमारे यहां पधारने वालों में कैनेडा, इंडोनीसिया, चीन और श्रीलंका के प्रधान मंत्री हैं । यूगोस्लाविया के राष्ट्रपति और पाकिस्तान के गवर्नर जनरल का भारत में स्वागत करने का भी हमें सौभाग्य प्राप्त हुआ । हमारे उपराष्ट्रपति ने हमारी सद्भावना का संदेश अमेरिका, कैनेडा, मैक्सिको, अर्जनटीना, चिली, बोलीविया, पेरू, ब्राजील, यूरूगोवे और इटली तक पहुंचाया । हमारे प्रधान मंत्री, मित्र के नाते, चीन, बर्मा, इंडोनीसिया, इंडोचाइना और मिश्र गए । हाल ही में लंदन में होने वाले राष्ट्रमण्डलीय प्रधान मंत्रियों के सम्मेलन में उन्होंने भाग लिया, जहां संसार की शांति से सम्बद्ध महत्वपूर्ण मामलों पर स्पष्टता से और मैत्रीपूर्ण ढंग से बातचीत की गई ।

तिब्बत के बारे में चीन और भारत के बीच किए गये समझौते का मैं विशेष रूप से जिक्र करना चाहूंगा । इस समझौते द्वारा इन दोनों महान् देशों के बीच मैत्री की पुष्टि हुई, जिसका एशिया तथा संसार की शान्ति से इतना अधिक सम्बन्ध है । इस समझौते में कुछ सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया गया है, जिन्हें अधिक व्यापक रूप दिया जा सकता है और बहुत से देशों ने उन सिद्धान्तों को स्वीकार भी किया है । ये पांच सिद्धान्त, जिन्हें प्रायः पंचशील कहा